स्थायी समाधान प्रायश्चित

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

प्रकृति का नियम है कि बिना कारण के कार्य नहीं होता। यह शाश्वत सत्य है। कोई भी ऐसी समस्या नहीं है जिसका समाधान न हो। हर समस्या का समाधान भीतर छिपा होता है। समस्या का स्थायी समाधान है प्रायश्चित। मानव अच्छाई और बुराई का पुतला है। जब एक व्यक्ति समाज में रहता है तो समाज की अच्छाई–बुराई, गुण–दोष से वह प्रभावित होता है। यदि कोई व्यक्ति कोई गलत कार्य करता है तो संविधान की व्यवस्था के अनुसार उसे दण्ड मिलता है। गलती सिद्ध हो जाने पर उसे जेल में बन्द कर दिया जाता है। जेल में उसे सुधार करने का मौका मिलता है। अपराधी को जेल में प्रायश्चित का मौका मिलता है। जेलर कैदियों के स्वभाव को बदलने का प्रयास करता है।

गलती को महसूस करके सुधार करने का प्रयास करना चाहिए। भीतर से सुधार की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। अपने साथ वाले कैदियों को भी सुधारने का प्रयास करना चाहिए। कभी–कभी व्यक्ति भावावेश में बुरा कार्य कर देता है। कुछ समय बाद उसे अपनी गलती महसूस होती है और वह प्रायश्चित कर सुधार करता है। प्रायश्चित पापों का शुद्धिकरण है। गलतियों के सुधार का सबसे अच्छा उपाय प्रायश्चित है। सामायिक, आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान के द्वारा सुधार किया जाता है। अपने दोषों को स्वीकार करके उसे सुधार करना चाहिए। प्रायश्चित सबसे बड़ा समाधान है। क्षमा लेना और क्षमा देना साहस का कार्य है।

कायर व्यक्ति न तो क्षमा कर सकता है और न ही क्षमा ले सकता है। उसके भीतर प्रतिशोध की भावना रहती है। प्रतिशोध की अग्नि दूसरों को जलाये या ना जलाये परन्तु स्वयं को तो जला ही डालती है। इसलिए प्रतिशोध नहीं करना चाहिए। यदि गलती किया है तो क्षमा मांगने में कोई बुराई नहीं है। सभी प्रकार की समस्याएं प्रायश्चित से समाप्त हो जाती हैं। प्रायश्चित करने के लिए जैन धर्म में सामायिक आदि का विधान किया गया है। सामायिक का अर्थ है समय या आत्मा में स्थित होना, जीवन जीने के लिए धर्मानुष्ठान करना। किसी के

साथ यदि हम बुरा व्यवहार करते है और उसे हमारे व्यवहार से कष्ट होता है तो हमें दोष लगता है, पाप लगता है। जिस व्यक्ति की आत्मा संयम, नियम और तप में जागरूक है, उसके सामायिक होता है। जो त्रस और स्थावर सभी प्राणियों में समभाव रखता है, उसके सामायिक होता है। सभी प्राणियों में समभाव रखना ही सामायिक है। दोषों से छुटकारा पाये बिना मुक्ति नहीं हो सकती। मानसिक, वाचिक और कायिक प्रवृत्तियों द्वारा किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं देना चाहिए।

अपने दोषों को स्वीकार करना आलोचना है। आलोचना का अर्थ है अपना अन्तर्निरीक्षण करना। दिन भर मैंने क्या–क्या किया? यदि मुझसे किसी प्रकार की त्रुटि हुई हो तो उसके लिए मैं प्रायश्चित करता हूं। दोषों से निवृत्ति को प्रतिक्रमण कहते हैं। जिस क्रिया के द्वारा किए हुए दोषों, अपराधों एवं पापों का प्रक्षालन करके जीव शुद्ध होता है, वह प्रतिक्रमण कहलाता है। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव पूर्वक किए हुए अपराधों का मन, वचन और काया से निन्दा आत्मालोचन या अपनी भूलों के प्रति अनादर का भाव प्रगट करना और गर्हा गुरु के समक्ष अपनी भूलों को प्रगट करना के द्वारा शोधन करना प्रतिक्रमण है।

प्रतिक्रमण के पर्यायवाची आठ नाम हैं– प्रतिक्रमण–सावद्ययोग से विरत होकर आत्मशुद्धि में लौट आना, प्रतिचरणा–अहिंसा, सत्य आदि संयम में सम्यक् रूप से विचरना, परिहरणा–सभी तरह के अशुभयोगों का त्याग, वारणा–विषय–भोगों से स्वयं को रोकना, निवृत्ति–अशुभ प्रवृत्ति से निवृत्त होना, निन्दा–पूर्वकृत अशुभ आचरण के लिए पश्चाताप करना, गर्हा–आचार्य, गुरु आदि के समक्ष अपने अपराधों की निंदा करना, शुद्धि–अतीत में किए गए दोषों की आलोचना, निंदा, गर्हा तथा तप के द्वारा आत्मशोधन करना।

प्रतिक्रमण से जीव को क्या प्राप्त होता है? इसके उत्तर में कहा जा सकता है कि प्रतिक्रमण से जीव स्वीकृत व्रतों के छिद्रों को बंद कर देता है। व्रत–छिद्रों को बन्द कर देने वाला जीव आस्रवों का निरोध करता है, उसका चारित्र–अतिचारों से रहित होता है, वह प्रवचनमाताओं के आराधन में सतत सावधान रहता है तथा सम्यक् समाधियुक्त होकर विचरण करता है। प्रतिक्रमण व्रतों के अतिचारों को दूर करने का महत्त्वपूर्ण उपाय है। इसलिए सभी साधकों को

प्रतिक्रमण करना चाहिये। सभी प्रतिक्रमण आलोचनापूर्वक होता है, तब उससे दोषशुद्धि होती है।

अयोग्य के ग्रहण का परित्याग करना प्रत्याख्यान है। भविष्य काल के प्रति मर्यादा के साथ अशुभयोग से निवृत्ति और शुभयोग में प्रवृत्ति का आख्यान करना प्रत्याख्यान है। नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव इन छह निक्षेपों के विषय में शुभ, मन, वचन और काय के द्वारा भविष्य और वर्तमान काल के लिए दोषों का त्याग करना प्रत्याख्यान है। समस्त वाचनिक विकल्पों का त्याग करके तथा अनागत शुभाशुभ का निवारण करके जो साधक आत्मा को ध्याता है, उसे प्रत्याख्यान होता है। जो साधक समस्त कर्म जनित वासनाओं से रहित आत्मा को देखता है, उनके पापागमन के कारणभूत भावों का त्याग प्रत्याख्यान है।